http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 1, 22-24

Article ID:551

किसान सशक्तिकरण में कृषि प्रसार की महत्ता

सुप्रज्ञ कृष्ण गोपाल[1*], मंजुल जैन[2], रवि पटेल[2], रजनीश कुमार[3]

[1]कृषि प्रसार एवं संप्रेषण विभाग, सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, नैनी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश- 211007

[2]सहायक, प्रोफेसर, कृषि विद्यालय, एकलव्य विश्वविद्यालय, (म.प्र.)

[3]सहायक प्रोफेसर, कृषि विद्यालय, ज्ञानवीर विश्वविद्यालय, सागर (मध्य प्रदेश) 470115

[*]अनुरूपी लेखक

सुप्रज्ञ कृष्ण गोपाल[*]

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि और उससे जुड़े क्षेत्र हैं। देश की लगभग आधी से अधिक जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि किसानों का सामाजिक आर्थिक उत्थान राष्ट्रीय विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। किसानों की आय में वृद्धि, ग्रामीण रोजगार सृजन तथा सतत कृषि विकास को सुनिश्चित करने में कृषि की भूमिका केंद्रीय रही है। कृषि प्रसार एक सतत, व्यवस्थित और सहभागी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से कृषि अनुसंधान से प्राप्त वैज्ञानिक ज्ञान, नवीन तकनीकें, सरकारी योजनाएँ, नीतिगत निर्णय और बाजार से जुड़ी जानकारियाँ किसानों तक प्रभावी ढंग से पहुँचाई जाती हैं। इसका उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि किसानों को सूचित निर्णय लेने, जोखिम कम करने और संसाधनों का दक्ष उपयोग करने में सक्षम बनाना है।

वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र अनेक जटिल चुनौतियों जैसे जलवायु परिवर्तन, मृदा एवं जल संसाधनों का क्षरण, उत्पादन लागत में वृद्धि और बाजार अस्थिरता का सामना कर रहा है। ऐसे परिदृश्य में कृषि प्रसार किसानों को ज्ञान-संपन्न, आत्मनिर्भर, नवाचार-उन्मुख और प्रतिस्पर्धी बनाने का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभरा है। इसी कारण कृषि प्रसार को किसान सशक्तिकरण का आधार स्तंभ माना जाता है।

2. किसान सशक्तिकरण की अवधारणा

किसान सशक्तिकरण का तात्पर्य केवल उत्पादन या उत्पादकता बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक बहुआयामी अवधारणा है। इसमें किसानों को ज्ञान, तकनीकी एवं प्रबंधकीय कौशल, संसाधनों तक पहुँच, निर्णय लेने की क्षमता, जोखिम प्रबंधन, बाजार समझ और आत्मनिर्भरता प्रदान करना शामिल है। एक सशक्त किसान वह होता है जो—

- ✓ बदलती जलवायु एवं बाजार परिस्थितियों के अनुसार तकनीक अपनाने में सक्षम हो,
- ✓ पारंपरिक खेती से आगे बढ़कर खेती को लाभकारी उद्यम के रूप में विकसित कर सके,
- ✓ सरकारी नीतियों और योजनाओं का लाभ प्रभावी ढंग से उठा सके,
- ✓ तथा सामाजिक एवं संस्थागत ढाँचे में सक्रिय भूमिका निभा सके।

इस प्रकार किसान सशक्तिकरण में आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी, डिजिटल और संस्थागत सभी आयाम सम्मिलित होते हैं, जिनमें कृषि प्रसार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और केंद्रीय है।

3. किसान सशक्तिकरण में कृषि प्रसार की भूमिका

3.1 वैज्ञानिक ज्ञान का प्रसार

कृषि प्रसार किसानों तक उन्नत किस्मों, गुणवत्तापूर्ण बीज, संतुलित पोषण प्रबंधन, समेकित कीट एवं रोग प्रबंधन, जल एवं मृदा संरक्षण तकनीकों की जानकारी पहुँचाता है। इससे उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि होती है तथा खेती अधिक वैज्ञानिक और टिकाऊ बनती है।

3.2 कौशल विकास एवं क्षमता निर्माण

प्रशिक्षण कार्यक्रमों, फील्ड प्रदर्शनों, कृषक कार्यशालाओं और अध्ययन भ्रमणों के माध्यम से कृषि प्रसार किसानों में तकनीकी, प्रबंधकीय और उद्यमिता कौशल का विकास करता है। यह प्रक्रिया किसानों को आत्मनिर्भर बनाकर उन्हें आधुनिक कृषि अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

3.3 नवीन तकनीकों को अपनाने में सहायता

कृषि प्रसार किसानों को नई तकनीकों के लाभ, लागत और जोखिमों से अवगत कराकर नवाचार को अपनाने की प्रवृत्ति विकसित करता है। इससे पारंपरिक खेती से उन्नत, लाभकारी और व्यावसायिक खेती की ओर संक्रमण संभव होता है।

3.4 आय वृद्धि एवं आजीविका सुरक्षा

फसल विविधीकरण, एकीकृत कृषि प्रणाली, मूल्य संवर्धन, कृषि-आधारित उद्यमिता तथा बाजार संपर्क के माध्यम से कृषि प्रसार किसानों की आय वृद्धि और आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3.5 सरकारी योजनाओं और नीतियों की जानकारी

कृषि प्रसार किसानों को विभिन्न सरकारी योजनाओं, अनुदानों, फसल बीमा, ऋण सुविधाओं और समर्थन मूल्य से संबंधित जानकारी प्रदान कर उन्हें इनका लाभ उठाने में सक्षम बनाता है।

3.6 सामाजिक सशक्तिकरण

किसान समूहों, स्वयं सहायता समूहों, किसान उत्पादक संगठनों और सहकारी संस्थाओं के गठन को प्रोत्साहित कर कृषि प्रसार सामूहिक शक्ति, सामाजिक सहभागिता और नेतृत्व क्षमता का विकास करता है।

3.7 डिजिटल एवं सूचना आधारित सशक्तिकरण

डिजिटल कृषि प्रसार के माध्यम से किसान मोबाइल ऐप्स, सोशल मीडिया, वेब पोर्टल और ऑनलाइन सेवाओं से मौसम पूर्वानुमान, बाजार भाव और कृषि सलाह प्राप्त कर समय पर एवं सटीक निर्णय ले सकते हैं।

4. कृषि प्रसार के प्रमुख माध्यम

- ✓ व्यक्तिगत संपर्क एवं परामर्श
- ✓ प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं फील्ड प्रदर्शन
- ✓ जनसंचार माध्यम (रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र)
- ✓ डिजिटल प्लेटफॉर्म, मोबाइल ऐप्स एवं SMS सेवाएँ
- ✓ किसान मेलों, कृषि प्रदर्शनियों एवं जागरूकता अभियानों का आयोजन

5. कृषि प्रसार से जुड़े प्रमुख संस्थान

- ✓ कृषि विज्ञान केंद्र
- ✓ राज्य कृषि विभाग
- ✓ कृषि विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान संस्थान
- ✓ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

- ✓ गैर-सरकारी संगठन एवं निजी क्षेत्र

ये संस्थान मिलकर कृषि प्रसार सेवाओं को सुदृढ़ बनाते हैं।

6. चुनौतियाँ

- ✓ कृषि प्रसार सेवाओं की सीमित पहुँच
- ✓ प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी
- ✓ छोटे एवं सीमांत किसानों तक प्रभावी संपर्क का अभाव
- ✓ डिजिटल विभाजन
- ✓ क्षेत्रीय एवं स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप सामग्री की कमी

7. भविष्य की दिशा

भविष्य में कृषि प्रसार को अधिक सहभागी, डिजिटल-समर्थ, नवाचार-आधारित और किसान-केंद्रित बनाना आवश्यक है। पारंपरिक प्रसार विधियों और आधुनिक डिजिटल तकनीकों के समन्वय से एक स्मार्ट, समावेशी और टिकाऊ कृषि प्रसार प्रणाली विकसित की जा सकती है, जो किसानों को बदलती चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाए।

8. निष्कर्ष

कृषि प्रसार किसान सशक्तिकरण का एक सशक्त और प्रभावी उपकरण है। यह न केवल किसानों की उत्पादन क्षमता बढ़ाता है, बल्कि उन्हें ज्ञान-सम्पन्न, आत्मनिर्भर, बाज़ार-उन्मुख और सामाजिक रूप से सशक्त बनाता है। सतत कृषि विकास, किसानों की आय वृद्धि और ग्रामीण समृद्धि के लिए एक मजबूत, आधुनिक और प्रभावी कृषि प्रसार प्रणाली अनिवार्य है।